समस्त देशवासी कृतज्ञ बनें, कृतघ्न नहीं – प्रो. अच्युत सामंत

51 वर्षीय प्रो. डॉ. अच्युत सामंत भुवनेश्वर, ओड़िशा के कीट–कीस के संस्थापक हैं, जिन्होंने अपनी कुल पाँच हजार रुपये की जमा पूँजी से 1992–93 में 'कीट' व 'कीस' जैसी विश्वविख्यात दो शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना की थी। आज 2016 में कीट विष्वविद्यालय में देश–विदेश के कुल 26 हजार युवा उच्च एवं तकनीकी शिक्षा पा रहे हैं, वहीं कीस में कुल 26 हजार आदिवासी बच्चे समस्त अत्याधुनिक आवासीय सह शैक्षिक सुविधाओं का निःशुल्क उपभोग करते हुए के.जी. कक्षा से पी.जी. कक्षा तक शिक्षा पा रहे हैं। पूरे कीट शैक्षिक संस्थान समूह में कुल लगभग 11 हजार कर्मचारी कार्यरत हैं। एक तरफ जहाँ कीट विश्वविद्यालय भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा 'ए' ग्रेड विश्वविद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है, वहीं कीस को यूएन **(United Nations)** ने मान्यता प्रदान की है। लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड आदि में कीट–कीस का नाम आज स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो चुका है, वहीं भारत की ओर से 'रीयो ओलंपिक:2016' के लिए कीट लॉ की छात्रा सुश्री दुती चान्द 100 मीटर महिला दौड़ प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई कर चुकी हैं। आज कीट–कीस के कारण 'पटिया' भुवनेश्वर के लगभग 7 लाख लोग स्वरोजगार पा रहे हैं। डॉ. सामंत जी की निजी पहल से उनके लगभग 500 असहाय मित्र–सहपाठी आदि पेंशन पा रहे हैं। डॉ. सामंत का जीवन–दर्शन 'आर्ट ऑफ गीविंग' और 'आर्ट ऑफ ऐप्रिसियेशन' ने उनको विश्व का महान शिक्षाविद् बना दिया है।

प्रो अच्युत सामंत जी के शब्दों में, 'सादा जीवन और उच्च विचार वाले' स्वर्गीय महात्मा गांधीजी ही मेरे जीवन के वास्तविक आदर्श हैं, जिन्होंने सत्य, अहिंसा और त्याग को अपने व्यक्तिगत जीवन में अपनाकर भारत को आजाद करा दिया। मैं मन, वचन और कर्म से अपने आपको सच्चा गांधीवादी मानता हूँ। सरलतम जीवन जीता हूँ। मेरा अपना न तो कोई घर है और न ही कोई परिवार। मेरे 'कीस' के 26 हजार आदिवासी बच्चे ही मेरे अपने परिवार हैं। उन्हीं की सेवा में प्रतिदिन मेरा 20 घंटा समय जाता है। मेरी सोच बचपन से ही सदा सकारात्मक रही है। मैं हमेशा लोगों की अच्छाई को ही देखता हूँ, बुराई को कदापि नहीं। बचपन से लेकर आज तक मेरे सम्पर्क में जो भी आया है, मैंने उसके अन्दर मात्र अच्छाई देखकर उसका भरपूर सहयोग किया है। मैं कोई स्वामी या संत नहीं हूँ। मैं कोई ज्ञानी–गुणी भी नहीं हूँ। मैं तो बस जगन्नाथजी और हनुमानजी को नित्य प्रणाम कर, अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर अपने समाज सेवा के पुनीत कार्य में सदैव लगा रहता हूँ।

जब मैं मात्र पाँच साल की उम्र का था, तभी मेरे पिताजी का असामयिक निधन हो गया। मैंने अपने बचपन की खुशियों को त्यागकर अपनी विधवा माँ और अपने तीन–तीन भाई–बहनों को स्वयं पढ़ते हुए उन्हें सहारा दिया, उन्हें स्वावलंबी बनाया। अच्छा इंसान बनाया। मेरी 89 वर्षीय

माँ और मेरे प्राइमरी स्कूल के पहले शिक्षक, जिन्होंने मेरा नाम 'अच्युतानन्द' दिया, उन्होंने भी मुझे एक ही बात बताई कि मैं अपने जीवन में सदा सकारात्मक सोच वाला बालक बनूँ और जो मेरी सहायता करे, उसके प्रति मैं आजीवन कृतज्ञ बनूँ। आज मेरे पास सब कुछ है– धन–दौलत, मान–मर्यादा और पद, सब कुछ।

जब मैं आज अपने भारतीय समाज को देखता हूँ तो मुझे बड़ा दुःख होता है। आज का भारतीय समाज अधिक से अधिक ईर्ष्यालु होता जा रहा है। समाज में चारों तरफ नकारात्मक सोच का बोलबाला है। कोई किसी के विकास से खुश नहीं है। सभी एक–दूसरे के पांव खींचने में लगे हुए हैं। सभी अपने दोषों को भुलाकर दूसरों के छोटे–से–छोटे दोषों को बड़ा प्रोजेक्ट कर उसका अतिश्योक्तिपूर्ण बयान करने में लगे हुए हैं। आज पूरा भारतीय समाज मनमुटाव, विद्वेष और एक–दूसरे को अधिक से अधिक हानि पहुँचाने में लगा हुआ है। सभी व्यक्ति आवश्यकता से अधिक महत्वाकांक्षी बनते जा रहे हैं। इससे भारतीय समाज और भारत राष्ट्र का नुकसान होगा। हमें आज अपनी सोच को सकारात्मक बनाने की जरूरत है।

अपने भारत राष्ट्र के प्रति, भारतीय समाज के प्रति और सच कहें तो भारतीय संस्कृति के प्रति कृतज्ञ बनने की आवश्यकता है, कृतघ्न बनने की नहीं। आज अगर भारत के सभी बच्चे, जवान, पुरुष–स्त्री, माताएँ, बहनें और आम नागरिक अगर कृतज्ञ बन जायें तो भारत विकासशील से विकसित बन जाएगा। 2020 तक इंतजार करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। अंत में, सिर्फ एक ही बात कहूँगा अपनी 'दिव्य वाणी के प्रसंग में' कि सभी मेरी तरह दुःख–सुख में सम भाव से सदा मुस्कुराते रहें और कृतज्ञ बनकर मेरी तरह से निःस्वार्थ समाजसेवा करते रहें।